Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H. D. Jain college, Ara.

Notes For- B.A. Part-III, Paper-5

Topic:- बलबन के शासन का महत्व :- बलबन ने शासक बनने के पश्चात् अनुभव किया कि उसके सामने अनेक समस्याएं मौजूद है। इसके निवारण के लिए बलबन ने सर्वप्रथम एक कठोर प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की।

लगभग- 20 वर्षों तक शासन करने के पश्चात 1287 ई० में बलबन की मृत्यु हुई। बरनी का कहना है कि- "बलबन की मृत्यु से दुखी हुए मलिकों ने अपने-अपने वस्त्र फाड़ डाले और सुल्तान के शव को नंगे पैरों दारुल-अमन के कब्रिस्तान को ले जाते हुए अपने-अपने सिरों पर धूल फेंकी। उन्होंने 40 दिनों तक उसकी मृत्यु का शोक मनाया और भूमि पर सोए।"

एक निरंकुश शासक को इतना सम्मान इंगित करता है कि वास्तव में उसे अपने अमीरों का कितना प्यार प्राप्त था। बलबन ने लम्बे समय तक एक नायब और सुल्तान के रूप में उसका बहुत बड़ा योगदान है। यद्यपि सुल्तान के रूप में बलबन बहुत अधिक युद्ध और विजय नहीं कर सका, साम्राज्य की सीमा का विस्तार नहीं कर सका, तथापि उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने सुल्तान को अल्लाह का प्रतिनिधि स्थापित कर उसके पद की गरिमा एवं शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि कर दी।

सुल्तान तुर्की अमीरों और उलेमा वर्ग के नियंत्रण से स्वतंत्र होकर स्वयं ही उनका मालिक बन बैठा। उसने प्रशासनिक व्यवस्था भी सुदृढ़ की। यद्यपि बलबन

ने निरंकुश राजसत्ता की स्थापना की, अपनी सत्ता एवं प्रभाव कायम करने के लिए आतंकवाद का सहारा लिया, अपने विरोधियों को निर्दयता पूर्वक कुचल दिया, परंतु जनता के प्रति उसने उदार दृष्टिकोण अपनाया। उसने जनहित और अभिजात वर्ग को राजा का प्रमुख कर्तव्य माना।

जिन परिस्थितियों में बलबन गद्दी पर बैठा था, उसमें आतंकवाद ही सुल्तान की शक्ति स्थापित करने का एकमात्र साधन था। इसीलिए तो इस निरंकुश शासक की मृत्यु के पश्चात् जनता और अमीरों ने राहत की साँस लेने के बदले शोक मनाया।

प्रो० ईश्वरी प्रसाद बलबन को भारत में नवस्थापित मुस्लिम राज्य का संरक्षक तथा मध्यकालीन भारतीय इतिहास की एक महान विभूति मानते हैं। निरंकुश शासक होते हुए भी बलबन धर्मभीरु शासक था। वह कुरान के नियमों का दृढ़ता से पालन करता था।

उसने कला एवं साहित्य को भी संरक्षण दिया। मंगोलों के अत्याचारों से त्रस्त होकर भागे हुए अनेक मध्य एशियाई विद्वानों एवं राजकुमारों को भी उसने संरक्षण प्रदान किया।

उसके दरबार में, कवियों, चिकित्सकों, ज्योतिषियों, दार्शनिकों एवं संतों का जमघट रहता था। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध थे हिंदी तथा फारसी के विद्वान एवं कवि अमीर खुसरो। निःसंदेह बलबन आदि तुर्कों में सबसे अधिक प्रभावशाली था। इल्तुतमिश ने अपनी विजयों द्वारा तुर्की राज्य का निर्माण किया तथा बलबन ने अपनी नीतियों द्वारा इसे स्थायित्व प्रदान किया।

→

→ इतिहासकार हबीब, और निजामी बलबन की उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए उसकी असफलताओं की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। इनके अनुसार बलबन की प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों से राज्य को लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक हुई। शासक वर्ग की कुलीनता पर अत्यधिक बल देने की नीति तत्कालीन परिस्थितियों में संभव नहीं थी। इसके दो कारण थे। पहला नव-मुसलमान जिनकी सं० बढ़ रही थी, तुर्कों की श्रेष्ठता को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। एवं दूसरा कारण यह था कि प्रशासनिक आवश्यकता थी कि फारसी की जानकारी रखने वाले हिन्दूओं को राजस्व मामलों में स्थान दिया जाए, लेकिन बलबन ने ऐसा नहीं किया। इसी कुलीनता के आधार पर वह अपनी सेना को भी सशक्त नहीं बना सका।

बलबन की सैनिक उपलब्धियाँ प्रभावशाली नहीं हैं। वस्तुतः योग्यता के स्थान पर कुलीनता को महत्व देने की बलबन की नीति अंततः राज्य के लिए हानिकर सिद्ध हुई। बलबन की मृत्यु के शीघ्र बाद ही उसके वंश का शासन समाप्त हो गया। अतः बलबन अपने राजवंश को स्थायित्व प्रदान नहीं कर सका। यह उसकी सबसे बड़ी विफलता मानी जा सकती है।

तुलनात्मक रूप से इल्तुतमीश की अपेक्षा दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ीकरण में बलबन का योगदान अधिक है। उसने दिल्ली सल्तनत को स्थायित्व प्रदान किया। यदि यद्यपि उसका राजवंश समाप्त हो गया परंतु दिल्ली सल्तनत के अस्तित्व पर खतरा नहीं आया।